INTERNATIONAL PUBLIC RELATIONS CONFERENCE
NEWS BULLETIN
25-27 NOVEMBER 2023
PRSI Public Relations Society of India
G20 भारत 2023 INDIA

तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय जनसंपर्क महोत्सव

सफलतापूर्वक सम्पन्न

पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव का सफलतापूर्वक समापन हो गया। महोत्सव के अंतिम दिन चार सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विषयों पर वक्ताओं ने विचार साझा किए। तकनीकी सत्रों के अलावा अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले संस्थानों और व्यक्तिओं को सम्मानित किया गया। शानदार तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव समापन सत्र के साथ सम्पूर्ण हुआ।

सम्मान समारोह एवं समापन सत्र में राज्यसभा सांसद डॉ. सोनल मानसिंह, विदेश मंत्रालय के राजदूत श्री राजशेखर एवं पीआरएसआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अजीत पाठक, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (नोर्थ) नरेंद्र महता, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (ईस्ट) एमएस मजूमदार, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (साउथ) यूएस सरमा, सेक्रेटरी जनरल डॉ. पीएलके मूर्ति, इंडिया टुडे मीडिया इंस्टीट्यूट के अधिष्ठाता और निदेशक ध्रुबा ज्योति पति मौजूद रहे।

राज्यसभा सांसद डॉ. सोनल मानसिंह ने कहा कि लोकतंत्र में कूटनीति एक प्रकार का जनसंपर्क का कार्य करती है। कोरोना काल में भारत ने विदेशों में वैक्सीन पहुंचाकर सभी का जो सहयोग किया, वह वैश्विक जनसंपर्क को लेकर भारत की दूरदर्शिता को दर्शाता है। विदेश मंत्रालय से आए श्री राजशेखर ने अपने भाषण में कहा कि विभिन्न देशों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए इस तरह के जनसंपर्क कार्यक्रम लाभकारी सिद्ध होते हैं। सम्मान समारोह एवं समापन सत्र का मंच संचालन क्रमशः शीतल शर्मा और देव कन्या ने किया।

अंतिम दिन के पहले सत्र का विषय 'भारत-विश्व का आध्यात्मिक गुरु' रहा, जिसकी अध्यक्षता ग्राफिक्सएड्स के अध्यक्ष श्री मुकेश गुप्ता ने की। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ जुड़ने के कारण बचपन से ही मुझे आध्यात्मिक वातावरण मिला। वहां मुझे मेडिटेशन के विषय में ज्ञात हुआ एवं ध्यान के माध्यम से मैं सफल जीवन जीने की कला सीख सका। अध्यात्म के महत्व को जन-जन

पीआरएसआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अजीत पाठक ने समापन समारोह के अवसर पर कहा कि पीआरएसआई लगातार जन सम्पर्क के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहा है। पीआर का उद्देश्य सिर्फ संस्थान को लाभ पहुंचाना न होकर समाज के हित के लिए प्रयास करना है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए पीआरएसआई जन सम्पर्क के क्षेत्र में कार्य करने वाले पीआर प्रोफेशनल्स और संस्थानों के साथ मिलकर समाज के विकास के लिए कार्य कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय होने पर मुझे गर्व है। हमने बीते तीन दिनों में जी-20 में भारत की अध्यक्षता और जन सम्पर्क के विभिन्न मुद्दों पर विचार साझा किया गया है, जो भविष्य में हितकारी रहेगा।

तक पहुंचाने के लिए हमने साधना चैनल की शुरुआत की।
'भारतीय मूल्यों के माध्यम से विश्व शांति' विषय पर बोलते हुए विश्व शांति दूत एचएच आचार्य मुनि लोकेश ने कहा कि बदलाव के लिए प्रयोग आवश्यक है। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली में ज्ञान के साथ प्रयोग भी आत्मसात था। आज की शिक्षा भौतिकवाद में उपयोगी हो सकती है, परंतु मन की शांति से ही विश्व में शांति होगी।
ब्रह्मकुमारी गुरुग्राम आश्रम से बहन बीके हुसैन ने ओम शांति का मंत्र देते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव में आध्यात्मिक गुरुओं को बुलाने के लिए पीआरएसआई को धन्यवाद दिया। जनसंपर्क के माध्यम से लोग एक दूसरे से जुड़ते हैं लेकिन जुड़ने का अर्थ केवल हाथ मिलाना, नंबर या कार्ड बदलना नहीं है। जुड़ने का अर्थ है हृदय की भावना से लोगों को स्वयं की तरफ प्रभावित करना। शांति मन के भीतर ही व्याप्त है बस आपको उसे समझने की जरूरत है।
गेल इंडिया लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक (एचआर) श्री डी वी शास्त्री ने 'भागवत गीता और प्रबंधन' पर बोलते हुए कहा कि गीता ज्ञान का भंडार है, मन के विचलन को रोकने के लिए गीता का पाठ आवश्यक है। श्री कृष्ण कहते हैं कि निःसंदेह मन विचलित है, लेकिन निरंतर प्रयास से इसे स्थिर किया जा सकता है। गीता स्वयं, व्यक्तियों और संस्थानों को प्रबंधित करने का रास्ता प्रदान करती है। हमारे आचरण और कर्म में एकरूपता होगी तो ही हम एक अच्छे लीडर और मैनजर बन सकते हैं।
दूसरे सत्र की अध्यक्षता इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड एवं स्कोप के पूर्व चेयरमैन श्री सार्थक बहुरिया ने पीआरएसआई के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसा प्रयास समाज को सही दिशा देने के लिए आवश्यक है। उन्होंने जी-20 के विषय पर कहा कि जी-20 ने विकास के हर क्षेत्र में गति प्रदान की है, लेकिन उस गति को बरकरार रखना एक नई चुनौती है। वहीं, जीएसटी परिषद सचिवालय के अतिरिक्त सचिव श्री पंकज कुमार सिंह ने कहा कि जीएसटी से भारत के अर्थतंत्र में बड़ा बदलाव आया है। आजकल विज्ञापन और पीआर सेवा क्षेत्रों का विस्तार जिस तेजी से हो रहा है, वह देश की अर्थव्यवस्था में भी बड़ी भूमिका निभाएगा।
भारतीय जन संस्थान की प्रोफेसर डॉ. सुरभी दहिया ने भारतीय मीडिया इको-सिस्टम पर अपने विचार साझा करते हुए कहा कि 2007-2008 की मंदी के समय में मीडिया का शुरूआती दौर था, लेकिन आज इतने कम समय में भारतीय मीडिया की तरक्की सराहनीय है। विज्ञापन का क्षेत्र पहली बार एक लाख करोड़ के पार पहुंचा है। वहीं मीडिया और मनोरंजन के क्षेत्र में कंटेंट, वाणिज्य और समाज मूल स्रोत हैं। भारतीय मीडिया और मनोरंजन के क्षेत्र में पहली बार 2022 में 20 प्रतिशत की बढोत्तरी के साथ 2 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच चुका है। यह इस इको-सिस्टम को और मजबूत बनाने का कार्य कर रहा है।
शिक्षा भागीदारी राष्ट्रीय कौशल विकास निगम की महाप्रबंधक डॉ नीता प्रधान ने कौशल विकास पर अपना वक्तव्य रखते हुए कहा कि हर व्यक्ति में किसी न किसी प्रकार का कौशल अवश्य होता है। भारत भी कौशल विकास के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है और कौशल विकास व उद्यमशीलता मंत्रालय इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। दूसरे सत्र का संचालन डॉ. सोनम महाजन ने किया।
तीसरे सत्र की अध्यक्षता पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री समीर गोस्वामी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि स्वास्थ्य संचार की कोविड-19 के समय में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उस समय लोगों को सलाह देने, सचेत करने और स्वास्थ्य की जानकारी देने में जनसंचार और जनसंपर्क ने विशेष योगदान दिया है।
अपोलो हॉस्पिटल, चेन्नई की जनसंपर्क हेड सुश्री सुगंती सुंदरराज ने 'स्वास्थ्य संचार: कोविड-19 के बाद पीआर प्रोफेशनल्स का विस्तार' विषय पर बोलते हुए कहा कि विश्व स्तर पर जब सभी कोरोना महामारी से सूझ रहे थे, उस वक्त भारत ने शोध व विकास के अद्भुत कार्यें करके अपनी क्षमता को दुनिया के सामने प्रदर्शित किया। स्वास्थ्यकर्मियों, पुलिस अधिकारियों, स्वच्छता कार्यकर्ताओं के साथ-साथ स्वास्थ्य संचार से जुड़े पीआर प्रोफेशनल्स का भी अहम योगदान रहा है। उनके बिना इस महामारी से निपटना नामुमकिन था।
वहीं, जन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश के आईईसी निदेशक डॉ. रचना दूबे ने स्वास्थ्य जागरूकता के बारे में बात करते हुए कहा कि जनसंचार ने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलना का काम किया है। लोगों को उनके स्वास्थ्य का खास ख्याल रखने, लगातार बढ़ रही बीमारियों को दूर करने के लिए व्यायाम करने तथा अव्यवस्थित दिनचर्या के कारण महिलाओं में पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (पीसीओएस) जैसी गंभीर बीमारियों की बढ़ती संख्या को रोकने के लिए जनसंचार माध्यम को और अधिक प्रयास करना होगा।
एचपीसीएल मुम्बई के पीआर और सीसी के मुख्य प्रबंधक श्री सुदीप्तो बसाक ने जन सम्पर्क में स्टोरी टेलिंग का मूल्यांकन विषय पर एक शोध का हवाला देते हुए कहा कि 68 प्रतिशत तक कंज्यूमर ब्रांड स्टोरी से प्रभावित होकर खरीदने का निर्णय लेते हैं। इसलिए एक पीआर विभाग को एक बेहतर हथियार के रूप में उपयोग किया जा सकता है। अपने पीआर को बेहतर और व्यवस्थित तरीके से बढ़ाने के लिए स्टोरी टेलिंग एक बेहतर विकल्प है।
वहीं, विजीकी के सह संस्थापक सुश्री आकृति भार्गव अपने विचार रखते हुए कहा कि पीआर को आसान बनाने के लिए तकनीक का भरपूर उपयोग किया जा सकता है। वर्तमान में एआई का उपयोग इसे बहुत आसान बना सकती है।
अंतिम दिन के तीसरे सत्र का मंच संचालन डॉ. नेहा ने किया। तीन दिवसीय महोत्सव के अंतिम सत्र की अध्यक्षता विवेकानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज की संकायाध्यक्ष डॉ. चारुलता सिंह ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में विभिन्न महत्वपूर्ण फोटोग्राफ का उदाहरण देते हुए कहा कि फोटो संचार का एक शक्तिशाली टूल है। इसके सही और अधिक उपयोग संचार को सरल, रोचक और प्रभावशाली बनाता है।
इंडिया टुडे के पूर्व मुख्य फोटोग्राफर शेखर घोष ने पेशेवर फोटोग्राफी: कॉर्पोरेट कहानी के लिए नींव पर बोलते हुए कहा कि एक फोटोग्राफर को पूरी जिम्मेदारी और ईमानदारी के साथ काम करना चाहिए। अपने पेशे के साथ समाज के प्रति अपने दायित्व को समझने की भी जरूरत है। हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि पैसों से ज्यादा काम को महत्वता दें।
दूरदर्शन की पहली कैमरा पर्सन इंदु दांग ने कहा कि महिलाएं फोटोग्राफी में लगातार आगे बढ़ रही हैं। मेरा सफर काफी मुश्किल भरा रहा, क्योंकि महिलाओं को उनकी सीमाएं समाज निर्धारित कर देता है। मैंने समाज की सीमाओं को पार करके कैमरापर्सन के रूप में अपनी पहचान बनाई। अंतिम सत्र का संचालन डॉ. नेहा जिंगला सत
पीआरएसआई के सेक्रेटरी जनरल डॉ. पीएलके मूर्ति ने धन्यवाद ज्ञापित किया। राष्ट्रगान के साथ तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव का सफलतापूर्वक समापनि कया गया

आध्यात्मिकता हमारे भीतर प्राकृतिक रूप व्याप्त होती है- दीदी बीके हुसैन

जब हम कहते है आध्यात्मिकता तब वह स्वयं ही हमें आपस में जोड़ देती है, क्योंकि जब हम किसी से जुड़ना चाहते हैं तो सीधे हमारे स्नेहता आ जाती है। उसके लिए हमें शांति से व्यवहार करना है। यदि हमारे अंदर यह व्यवहार नहीं होता है तब हम जुड़ नहीं सकते।
आध्यात्मिकता हमारे भीतर प्राकृतिक रूप व्याप्त होती है। इन गुणों के माध्यम से एक दूसरे से जुड़ना हमारे लिए आसान हो जाता है। मुझे लगता है आध्यात्मिकता किसी भी जनसंपर्क गतिविधि का मूल आधार है।
ओम शांति का अर्थ है- मैं शांत आत्मा हूं। जितनी बार हम ओम शांति बोलते हैं उतनी बार हम ये महसूस करते हैं कि मैं एक शांत आत्मा हूं, परमात्मा की संतान हूं। अगर आप ओम शांति के मंत्र का उच्चारण करते हैं तब आप अशांत वातावरण से स्वतः ही बाहर आ जाएंगे। युवाओं को अपनी दिनचर्या में बदलाव लाने की आवश्यकता है, उन्हें संस्कार, शुद्ध विचार और आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होना चाहिए।

तीसरे दिन 13 श्रेणियों में 33 पीआर प्रोफेशनल्स और संस्थान हुए सम्मानित

पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ इंडिया (पीआरएसआई) द्वारा आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय जनसम्पर्क महोत्सव के तीसरे दिन कुल 13 श्रेणियों में 33 पीआर प्रोफेशनल्स और संस्थान अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किए गए। इस मौके पर राज्य सभा सांसद डॉ. सोनल मानसिंह, विदेश मंत्रालय के राजदूत श्री राजशेखर तथा पीआरएसआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अजीत पाठक शामिल हुए। वहीं मंच संचालन डॉ. देव कन्या ने किया।

गौरतलब है कि अंतरराष्ट्रीय जनसम्पर्क महोत्सव के तीनों दिन अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए व्यक्ति और संस्थान को सम्मानित किया गया। तीनों दिनों में कुल 40 से अधिक श्रेणियों में 150 से अधिक व्यक्ति और संस्थान को सम्मानित किया गया।

बेस्ट इनिसिएडिव फोर प्रमोटिंग साइंस एंड टेक्नॉलोजी के लिए प्रथम पुरस्कार भारत पैट्रोलियम का कॉरपोरेशन लि. ग्रेटर नोएडा और मोरी टेक हैदराबाद को मिला। "बेस्ट आर एंड डी इफोर्ट्स फोर प्रमोटिंग साइंस एंड टैक्नोलॉजी के लिए प्रथम पुरस्कार भारत पैट्रोलियम कॉरपोरेशन के ग्रेटर नोएडा तथा दूसरा पुरस्कार एनटीपीसी लि, विंध्याचल को मिला।

बेस्ट इनिसिएटिव फोर जी-20 के लिए प्रथम पुरस्कार इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लि. कॉरपोरेट ऑफिस नई दिल्ली के लिए आईटीसी लि. कोलकाता को दिया गया। भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपयी नेशनल अवेयरनेस कैम्पने अवार्ड के लिए प्रथम पुरस्कार" महा ट्रांस्को मुम्बई को दिया गया।

बेस्ट पीएसयू इम्लिमेंटिंग आरटीआई के लिए प्रथम पुरस्कार हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लि. मुम्बई को तथा दूसरा पुरस्कार एनएलसी इंडिया लि. नवेली (तमिलनाडु) को दिया गया। कॉरपोरेट ब्रॉशर के लिए प्रथम पुरस्कार इंडियन आयल कॉरपोरेशन वि. मार्केटिंग एचओ मुम्बई एचओ को दिया गया।

कॉरपोरेट वेबसाइट के लिए प्रथम पुरस्कार सलार जंग म्यूजियम हैदराबाद और आईसीटी लि. कोलकाता को तथा दूसरा पुरस्कार इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लि. कॉरपोरेट ऑफिस नई दिल्ली को दिया गया। ई-न्यूज लेटर के लिए प्रथम पुरस्कार इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लि. कॉरपोरेट ऑफिस नई दिल्ली को, दूसरा एनटीपीसी लि. लारा (छत्तीसगढ़), इनटीपीसी लि. दादरी और एनटीपीसी लि. साउथर्न रीजन एचक्यू हैदराबाद तथा तीसरा पुरस्कार गेल (इंडिया) लि. नई दिल्ली, इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन गोवाहाटी रिफाइनरी और एनटीपीसी ली. कहालगांव को

दिया गया। कॉरपोरेट फिल्म (अंग्रेजी) के लिए प्रथम पुरस्कार एनटीपीसी लि. बोंगाइगांव को, दूसरा पुरस्कार गेल (इंडिया) लि. नई दिल्ली तथा तीसरा पुरस्कार महाट्रांस्को मुम्बई को दिया गया। वहीं कॉरपोरेट फिल्म (हिंदी) के लिए प्रथम पुरस्कार इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लि. मथुरा रिफाइनरी, दूसरा पुरस्कार इनटीपीसी लि. दुंगल और इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लि. बरौनी रिफाइनरी तथा तीसरा पुरस्कार मध्य प्रदेश सरकार में स्वास्थ्य मंत्रालय के हेल्थ आईईसी ब्यूरो निदेशक और वेनचर्स एडवर्टाइजिंग प्राइवेट लिमिटेड मुम्बई को दिया गया।

बेस्ट यूज़ ऑफ सोशल मीडिया इन कॉरपोरेट कैम्पेन के लिए प्रथम पुरस्कार हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लि. मुम्बई को, दूसरा पुरस्कार इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लि. कॉरपोरेट ऑफिस नई दिल्ली और तीसरा पुरस्कार एनटीपीसी लि. बोंगाइगांव को दिया गया।

बेस्ट पब्लिक रिलेशन्स जर्नल के लिए प्रथम पुरस्कार पीआर वॉइस हैदराबाद को दिया गया। वहीं बेस्ट स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम पीएसयू के लिए प्रथम पुरस्कार एचपीसीएल मुम्बई को दिया गया।

INTERVIEW

You have to work in the field with hook and crook- Ms. Indu Dang

Ms. Indu Dang

First Cameraperson of Doordarshan

Ms. Indu Dang, In-charge of Doordarshan News, received the PRSI National Award 2023, being India's first woman cameraperson, for her outstanding contributions to the field of Mass Communication.
She completed her engineering with a specialization in radars and earned a master's in journalism and mass communication from IGNOU. Ms. Dang joined as a camera person at Doordarshan and rose to the highest position in the department. She has led the department for more than 5 years, including the challenging Covid-19 period. She completed a diploma course from FTII Pune and from ISRO Ahmedabad in camera.

Interviewed by ***Dr. Anshula Garg***

How has the receipt of the PRSI National Award contributed to your personal and professional growth?
I have received the Sadbhavna Award and other awards. PRSI is an institute that values people based on merit. Being a cameraperson is a highly professional field. You need to invest in your work and then reap the rewards. The award is recognition for the work you have done, and I am gaining a lot in my field.

Can you elaborate on the specific challenges you faced?
The field itself is full of challenges because working in the field is not easy. You have to work in severe heat and cold. Regardless of the situation, you have to complete your work and tasks, even during different work and positions. Everything is new and challenging every day. Challenges are significant; you need to have an attitude about when and how much to capture. In 2 to 3 minutes, you have to complete the entire task. When I started, there were only agencies and Doordarshan. But now, more than 100 people are present when you go. You need muscle power and your own personal space to cover the event. Everybody wants to capture the same event, and the challenge is to get the best shot. There is also the challenge of being a woman. Despite being a woman in the field, we earn respect. In the committee, we have worked and struggled with SPG. You have to get your work done by hook or crook. There was a time when Bill Gates came, and there was a call with the IT minister. I was there, and Doordarshan had a much bigger and heavier camera than others. Many people were there, more than 200. I said I have to leave, but others said no. Then I saw there was some railing and a wooden object, so I placed the camera there, took a chair, and stood somewhere else to do the reporting. So every day, you have to make instant decisions. Currently, I can count the number of women in the field, especially in videography and photography, on my fingers. In many professions like defense, aviation, doctors, lawyers, there are many women, but in this field, the number of women is limited. So, equality is not seen in this field.

Would you like to inspire other girls to pursue a career in Mass Communication as a Cameraperson?
Yes, definitely. When I entered this field, I didn't know I was the first woman getting into this field. I got selected for this job. At that time, telegram technology was prevalent when I joined FTII. We are professionals, and I have done my course in electronics and telecommunication, and this field is about photography, which is quite different. They got us selected and guided us to reach FTII Pune. There, we received the initial and official training, and then from different stations, we worked with different national broadcasters.

Lastly, Ms. Indu Dang highlighted the importance of instant decision-making in her profession. Can you provide more insights into her experiences?
The first challenge is that it is not a white-collar job. It should be clear in your mind that you have to face any situation. Sometimes we experience the luxury of a 7-star environment and sometimes the simplicity of Jhuggis. You have to face the consequences; it is not always glamorous. But in the end, you will be much satisfied because you are the people who show the world all about incidents through the lens. Today is the world of visualization. If you have one visual, you can create a story. If you don't have a visual, you can narrate. You are the person who witnesses the people. During a cricket match, you watch from home on TV. There are 15 cameras, providing all the angles. In the cricket field, we used to watch the ball and then the screen. This is what the camera angle is, a very vital part, and it is very recognized."

INTERVIEW

Cross checking of facts is part of Journalist's DNA- Himanshu Shekhar

Himanshu Shekhar Mishra works as a Senior Editor (Political & Current Affairs) in New Delhi Television Limited (NDTV India). He covers Government of India, Parliament and Indian Politics. He also visited Kabul in August, 2005 to cover former Prime Minister Manmohan Singh's first official visit to Afghanistan. While covering the India-Afghanistan Summit, he produced special reports on India's strategic interest in post-Taliban Afghanistan and India's support to the post-war reconstruction and rehabilitation work there.

Interviewed by ***Poornima Jaimini***

How influential is PR in shaping media narratives during a crisis?

Remember whenever there was a crisis covid 19 pandemic the flow of information hindered because of the lockdown. Offices were closed. means of communication have declined. It is not possible to have meetings with stakeholders.

So that was the time when for even a government officer is working from home. Very often they don't know what is happening in our company because the flow of communication within companies had got disrupted during locked down. People were living in isolation in their homes and working from home. So that was the time when publication officers became the most critical notes from where the information was coming to us. The CMD or the CEO of a company who directly brief a public relation officer and he would then communicate the right information to us. The flow of information after a few days when people settle down the flow of information. Publication officials were playing a very important role in facilitating the flow of information as to how let's say ITCs is with coping up with the crisis or how Different corporate giants are taking steps to actually help the nation in this time of crisis. So, PR plays a very important in that situation.

Do you believe there are potential conflicts between the need for accurate reporting and the pressures imposed by PR tactics during crises?

I don't think because no PR exercise can work on ground effectively if it doesn't correspond to sharing content which is truthful. It's very important to understand that PR professionals, journalists and media professionals are very important stakeholders in a democracy.

The kind of relationship, trust, interface, the degree of engagement they have actually conditions how good, positive and constructive information actually disseminates in the society. It's only through the PR that they try and communicate with journalist and then once I trust you, I communicate that with the nation. so this flow of communication is a pipeline which is based on trust, which is based on mutual respect and there is an understanding that you were sharing some information then it is in national interest and in their company's interest and it is truthful. That is why I said in my presentation also that Ajit Pathak at one time with a very important official in my life because he represented the official version of what was Indian oil's stand on a given issue. So, If he tells me the ABCDEF, I would say this is what the Indian Oil thinks about the petrol prices, whether it should go up or go down, she's very important to me. I think there is no conflict. In fact, there should be a better synergy between via professionals and media to ensure that more positive and constructive information reaches the society which is more useful for the society.

How do journalists navigate these challenges journalists navigate these challenges?

Journalist navigates these challenges through experience and networks. I have a right to speak to you, I have a right to speak to her but I also have a right to speak to her. I also have a right to speak to other officials. So cross checking of facts is something as a part of my DNA as a journalist. If something is marvel mighty and yet if you tell me ABCD is happening until and unless, I have known you for many years. I will always try to cross-check with other people whether this is happening or not happening. This is part of my news gathering protocol, it's not related to a PR professional but I have my own protocol that I've mentioned also in my presentation that I have to be able to keep my eyes in the eyes open all the time. So I have to be truthful. Ultimately when NDTV network broadcasts a news I am responsible for it.

How do you foresee the future dynamics between PR agencies and disaster journalism evolving, considering the technological investment and changing media landscapes?

Very important because, especially in the post disaster phase, where corporates are now being seen as a very important player in reconstruction and rehabilitation work. So if there's a better synergy between a reporter on ground zero in a disaster affected area and a PR professionals trying to gather news as to how and they should shape their corporate social responsibility strategies in terms of the needs of the affected people. You have to have first the primary information about what is happening in ground zero. What is the nature of loss? How many people have been affected? How they have been affected? That will help you frame your CSR strategies in a far more constructive way, so they are also if there is a better synergy between journalists working in a disaster zone and PR professionals working for their companies, giving them the right input as to what exactly is the nature of intervention required considering the losses in a given disaster zone, more productive outcomes will come. They will have far more effective which can be enough put in place implemented on the ground.

फेक न्यूज से समाज को बचाने की जरूरत- डॉ. यादव

प्रोफेसर डॉ अनुभूति यादव भारतीय जनसंचार संस्थान दिल्ली के न्यू मीडिया विभाग की प्रमुख और विज्ञापन एवं जनसंपर्क पाठ्यक्रम की निर्देशक हैं| वह एक अग्रणी विशेषज्ञ और भारत में मीडिया साक्षरता की सक्रिय प्रवर्तक हैं| उन्होंने भारत में डिजिटल और मीडिया साक्षरता शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयासरत है|

प्रोफेसर यादव के पास शिक्षण और अनुसंधान में 15 वर्षों से अधिक का अनुभव है| वह शिक्षाविद के साथ न्यू मीडिया और जनसंपर्क विशेषज्ञ भी हैं|

प्रस्तुत है **देवराज सिंह** के साथ बातचीत के अंश-

क्या डिजिटल एज में विश्वास बनाने के लिए जनसंपर्क एजेंसियां मददगार साबित हो सकती हैं?

डिजिटल एज में विश्वास बनाने में सबसे बड़ी भूमिका जनसंपर्क एजेंसियों की ही होती है| जितने भी ऑर्गेनाइजेशन है चाहे वह सर्विस सेक्टर हो या कोई प्रोडक्ट बेचने वाली कंपनी, सबके पास खुद की जनसंपर्क टीम होती है, जिनका पूर्व में मुख्य कार्य सिर्फ छवि निर्माण का होता था, परंतु वर्तमान परिपेक्ष में जहां हर तरफ न्यू टेक्नोलॉजी और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की होड़ लगी हुई है, वहां फेक न्यूज़ और गलत जानकारियां तेज प्रवाह से बह रही हैं| इन्हें रोकने की जिम्मेदारी जनसंपर्क एजेंसियों की होती है| अगर किसी आर्गेनाइजेशन के बारे में गलत अफवाह फैल रही है, तो उसे भी वह अपने स्तर से सही करने की कोशिश करेंगे, तभी हम इस समस्या से बाहर आ पाएंगे | इनसे निपटने के लिए संकट संचार बनाया गया था, पर वर्तमान समय में इनकी संख्या काफी बढ़ चुकी है जिससे निपटने के लिए जनसंपर्क एजेंसियों को खुद को तैयार करने की जरूरत है| फैक्ट चेकिंग और वेरीफिकेशन जैसी ट्रेनिंग जनसंपर्क एजेंसियों में काम करने वालों को दी जा रही है, वह न्यूज़ रूम या न्यूज़ मीडिया संस्थान के परिपेक्ष की है| पीआर प्रोफेशनल्स की अलग तरह से ट्रेनिंग नहीं करवाई गई है| किस तरह की अफवाहें फैलती हैं, कब फैलते हैं और अगर अफवाह फैल चुकी है तो उसे कैसे निपटा जा सकता है, जैसी समस्याओं से निपटना है तो यह ध्यान रखने की जरूरत है की जो लोग वहां काम कर रहे हैं, उन्हें अपने स्किल को और अधिक विकसित करने की जरूरत है|

डिजिटल ऐज के दौर में भारत की नई पीढ़ी किस समस्या से जूझ रही है?

यह जो हमारी नई पीढ़ी है जिन्हें जंजी किड्स या अल्फा किड्स कहा जाता है| हमारी जनरेशन की तुलना में तुलना में ये बच्चे बहुत ही स्मार्टर है| यह नई टेक्नोलॉजी को बहुत जल्दी सीख लेते हैं क्योंकि यह इसी टेक्नोलॉजी के साथ बड़े हो रहे हैं| उनकी चुनौतियां भी हमसे बहुत भिन्न है| जहां फेक न्यूज़ की बात आती है तो यह भी माना जा सकता है कि वह उसे हमसे पहले इसकी पहचान कर लें क्योंकि वह बहुत ज्यादा समय टेक्नोलॉजी के साथ बिता रहे हैं| बहुत सरी ऐसी समस्याएं हैं जिससे वह गुजर रहे हैं, जैसे इंटरनेट एडिक्शन, सोशल मीडिया एडिक्शन, परंतु यह जनरेशन जल्दी किसी भी फॉरवार्डेड व्हाट्सएप मैसेज पर विश्वास नहीं करते| यह एक फ़िल्टर बबल के अंदर फंसे हुए हैं| यह सिर्फ अपने जैसे विचार रखने वालों से ही घुलते मिलते हैं| उन्हीं से उनकी बातचीत होती है| उनके पास कंटेंट भी एक सीमित जगह से आता है जो उनके सोचने के तरीके और व्यवहार को प्रभावित करता है|

डीप फेक जैसे एआई टूल के बारे में भारत के आम जनमानस को जागरूक कैसे किया जा सकता है?

डीप फेक जैसे एआई के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए हमें एक व्यवस्थित प्रशिक्षण देना होगा| जबतक वह डीप फेक को खुद से करके न देख लें, तबतक सही तरीके से उनको समझाना मुश्किल है|

फैक्टशाला मीडिया लिटरेसी जैसी एनजीओ इस पर कार्य कर रही हैं| पर जिस तादाद में गलत जानकारियां समाज के लोगों तक पहुंच रही है उसके मुकाबले यह बहुत ही काम है| अगर इससे हमें बाहर आना है तो सिर्फ एनजीओ और सरकारी संस्थाएं के प्रयास के बात नहीं बनेगी बल्कि युवाओं को भी आगे आना होगा और लोगों को अपने स्तर से जागरूक करना होगा, क्योंकि यह पीढ़ी बहुत ही समझदार और मीडिया साक्षर है| हमें स्वयं ये जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेनी होगी और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना होगा|

VISITOR TOUCH

जनसंपर्क को लेकर मैं काफी उत्साहित रहता हूं| लोगों से जोड़े रखने के लिए ये एक मजबूत कड़ी का काम करती है| इससे हर बार आपको कुछ नया सीखने और जानने का अवसर मिलते रहता है| मैं पिछले तीन दिनों से इस कांफ्रेंस का हिस्सा हूं| ये कॉन्फ्रेंस बहुत ही बेहतरीन और सुप्रबंधित है| जितने भी वक्ता यहा आए है, उन्होंने अपना सांस्कृतिक, औद्योगिक और संघटनात्मक अनुभव साझा किया, जिससे हमें बहुत कुछ नया जानने का अवसर मिला| जनसंपर्क आज के परिपेक्ष में चाहे वह निजी हो या औद्योगिक क्षेत्र दोनों ही जगह बहुत आवश्यक है, पेशेवर जीवन के साथ-साथ ये आपके निजी जीवन को भी बहुत सरल बना देता है| विकसित भारत के निर्माण में इसकी बहुत अहम भूमिका रहने वाली है | जनसंपर्क की शक्ति को आज के विद्यार्थी और युवाओं को समझना बहुत जरूरी है| आने वाले समय में युवाओं को इस क्षेत्र में बहुत से नए अवसर मिलेंगे |

सुरेश जानू
हैदराबाद चैप्टर

Chief Editor - Dr. Ajit Pathank | **Editor -** Dr. Archana Kumari | **Associate Editor -** Mr. Yasir Arfat
Editorial Team- Ms. Jaya, Ms. Sabiha Farhat, Dr. Anshula Garg, Ms. Lavi Sharma, Ms. Pooja, Ms. Swati Sharma, Ms. Poornima Jamini, Mr. Deoraj Singh, Ms. Komal Shangloo. | Prepared in the supervision of Public Relations Society of India
Published by PRSI (For Internal Distribution only.)